२०/२/२१ Hindi II part (Hons) B. A. प्रभात रंजन कुमार, [redacted] अरुण शा कुमार

Ques → हिन्दी नाटक के उद्भव और विकास पर प्रकाश डालें।

Ans →

उपन्यास और निबन्ध के समान हिन्दी नाटक का वास्तविक उद्भव और विकास काल भी भारतेन्दु युग ही रहा है। उससे पूर्व शृंगारकालीन कवियों ने ब्रजभाषा काव्य में कुछ संस्कृत नाटकों का अनुवाद किया था। 16वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में हृदय राम ने हनुमन्नाटक का अनुवाद किया था। हिन्दी नाट्य साहित्य की यही सबसे पहली पुस्तक मानी गयी। उसके उपरान्त सुजान निवाज कृत 'शकुन्तला' और देवकृत 'देवमाया प्रपंच' नामक नाटकों का सृजन हुआ। 19वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में महाराज विश्वनाथ सिंह ने 'आनन्द रघुनन्दन' और ब्रजवासी दास ने 'प्रबोध चन्द्रोदय' आदि नाटकों की रचना की। इन सभी नाटकों में पद्य की प्रधानता और नाटकीय नियमों का अभाव है। साहित्यिक दृष्टि से इनका मूल्य नगण्य है। कुछ नाटकीय नियमों का पालन करते हुए भारतेन्दु के पिता गोपालचन्द्र उर्फ गिरिधर दास ने 'नहुष' नामक नाटक लिखा। कुछ आलोचकों ने नहुष को ही हिन्दी का पहला मौलिक नाटक माना है। इसके उपरान्त राजा लक्ष्मण सिंह ने संस्कृत के 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' का हिन्दी में अनुवाद किया जिसमें मूल कृति का सा सौन्दर्य पाया जाता है। इसके पद्य की भाषा ब्रज और गद्य की भाषा खड़ी बोली है।

तदोपरान्त भारतेन्दु का समय आता है। भारतेन्दु का युग प्राचीन और नवीन के संघर्षों का युग था। उनके नाटकों में इस संघर्ष की तीव्र प्रतिध्वनि है। उनके नाटक मौलिक और अनुदित दो प्रकार के हैं। वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति, चन्द्रावली, विषस्य विषमौषधम्, भारत दुर्दशा, नील देवी, अंधेर नगरी, प्रेम योगिनी आदि हैं। सत्य हरिश्चन्द्र यद्यपि कि मौलिक नाटक है, फिर भी आचार्य शुक्ल इस नाटक पर बंगला नाटक की छाया मानते हैं। इनके नाटकों में जीवन के प्रायः सभी क्षेत्रों का समावेश है। चन्द्रावली में प्रेम का आदर्श, नील देवी में ऐतिहासिक वृत्ति, भारत दुर्दशा में देश की दशा का चित्रण है। सत्य हरिश्चन्द्र में सत्य की रक्षा की गयी है। उनके अनुदित नाटकों में विद्यासुन्दर, पाखंड विडम्बन, धनञ्जय विजय, मुद्राराक्षस और भारत जननी हैं। इनके सभी नाटक अभिनय युक्त हैं। उन्होंने संस्कृत नाटक की अनेक रूढ़ नियमों का परित्याग कर हिन्दी नाटक को एक सर्वथा अभिनव और नवीन युग के अनुरूप रूप प्रदान करके उसे राष्ट्रीय भावना के प्रचार का सशक्त साधन बनाया था। वस्तुतः हिन्दी में नाटक लिखने का श्रेय भारतेन्दु को ही है।

क्रमशः —